नई दिल्ली | बुधवार 9 सितंबर 2009 | भाद्रपद 18 शक 1931 | आश्विन कृष्ण | 5 विक्रम 2066 | पेज 24* | मूल्य 3.50 रु या 6 रु द टाइम्स ऑफ इंडिया सहित | www.nbt.in | www.navbharatimes.com

NBT
नवभारत टाइम्स

महादान अंगदान से लाखों जिंदगियां बचाई जा सकती हैं, जरूरत है जागरूकता की

भारत को चाहिए जिंदगी देने वाले

पूनम पाण्डे || नई दिल्ली

हमारे देश में हर साल लाखों लोग सिर्फ इसलिए अपनी जान गंवा देते हैं क्योंकि इनके शरीर का कोई एक अंग काम करना बंद कर देता है। अगर लोग अंग दान करें तो लाखों जिंदगियां बचाई जा सकती हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि देश में अंग दान को लेकर जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए और ऐसा कानून बनाया जाना चाहिए कि अस्पताल में ब्रेन डेड व्यक्ति के अंगों को राज्य की संपत्ति माना जा सके।

गौरतलब है कि जब ब्रेन डेड काम करना बंद कर देता है तो जल्द ही अंग निकालने होते हैं, वरना वे खराब हो सकते हैं। ट्रांसप्लान्चटेशन ऑफ ह्युमन ऑर्गन्स एक्ट – 1994 से लागू है लेकिन अब तक देश में महज करीब 600 कैडवर (ब्रेन डेड व्यक्ति से लिए ऑर्गन) ट्रांसप्लांट हुए हैं।

ऑर्गन की कमी: यूं तो ऑर्गन की कमी ग्लोबल समस्या है लेकिन एशिया में हालात और खराब हैं। दुनिया भर में हर साल 27,000 लिविंग किडनी डोनर ट्रांसप्लांट होते हैं। मानव अंगों के डोनेशन और ट्रांसप्लांटेशन के फील्ड में काम कर रहे संगठन मल्टी ऑर्गन हारवेस्टिंग ऐड नेटवर्क फाउंडेशन के मुताबिक इंडिया में हर साल करीब तीन से साढ़े तीन हजार ट्रांसप्लान्टेशन होते हैं लेकिन इनमें 5 पर्सेंट से भी कम ब्रेन डेड डोनर से आते हैं। हालांकि जरूरत हर साल करीब डेड़ लाख ट्रांसप्लांटेशन की है। इसी तरह साल में करीब तीस हजार लिवर ट्रांसप्लांट की जरूरत है जबकि डोनर की कमी की वजह से लगभग 400 ट्रांसप्लांट ही हो पाते हैं।

एक अनुमान के मुताबिक इंडिया में ब्रेन डेड से ऑर्गन डोनेशन रेट 10 लाख में 0.05 से भी कम है। हांगकॉंग में यह रेट 5 और अमेरिका में करीब 25 है। एम्स में हार्ट ट्रांसप्लांट प्रोग्राम के हेड डां बलराम ऐरन कहते हैं कि पूरे देश में अब तक 70 से भी कम हार्ट ट्रासप्लांट हुऐ हैं। एम्स में अब तक 28 हार्ट ट्रांसप्लांट हुए हैं। रजिस्टर्ड लोगों में से भी 3-4 पर्सेंट को ही हार्ट मिल पाता हैं जबकि जरूरत लाखों में है। अभी तक एम्स में एक भी लंग ट्रांसप्लांट नहीं हुआ है।

जिंदगी का तोहफा

अगर माना जाए कि एक ब्रेन डेड व्यक्ति के सभी अंग इसतेमाल किए जा रहे हैं तो दो आंखें, दो लंग्स, दो किडनीज, एक हार्ट, एक लिवर, एक पैनक्रियाज के अलावा हड्डियों और स्किन का दूसरे पेशंट्स के लिए इस्तमाल किया जा सकता है। इस तरह एक जिंदगी खत्म होते-होते भी कई नई जिंदगियां दे सकती है।

▶▶**कैसे बदलेंगे हालात,** पेज 9